हृदयांगिनी

दिसंबर 2023 - जनवरी 2024

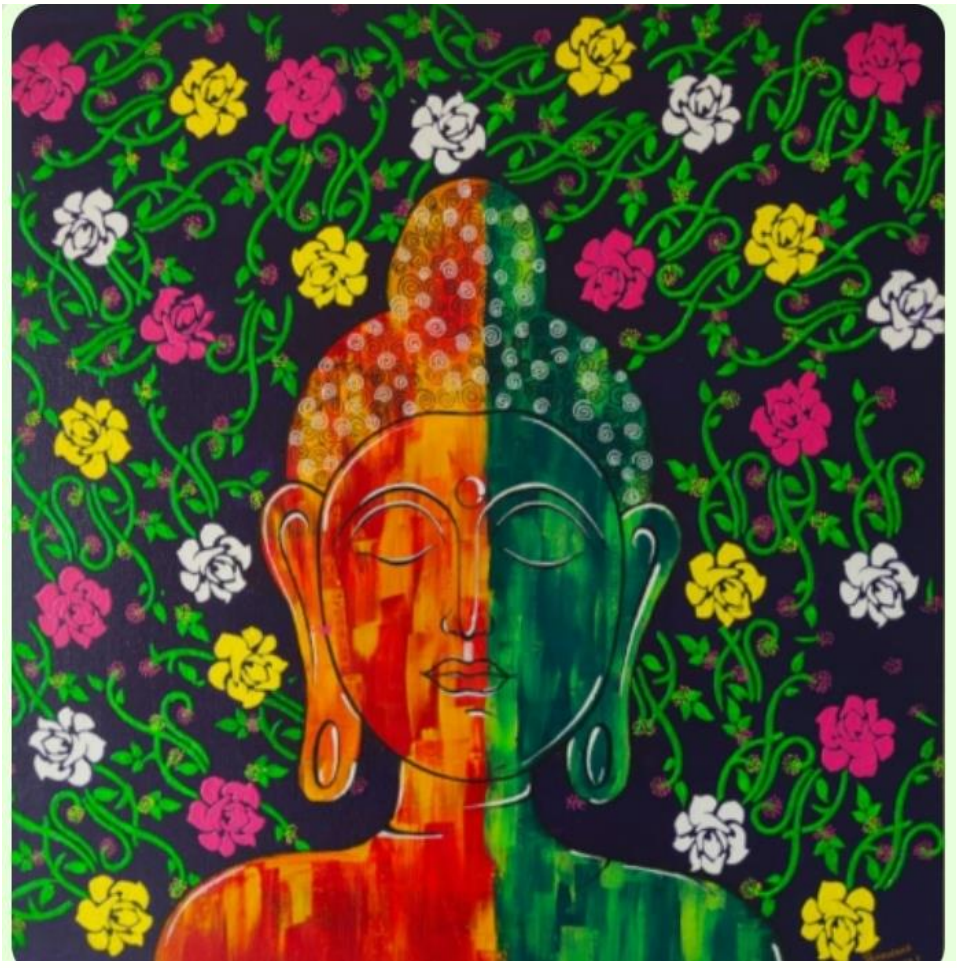

कलाकृति - नैनांश खत्री, नौवीं 'सी'

आयशर विद्यालय फरीदाबाद
गुडअर्थ फाउंडेशन स्कूल

‘प्रधानाचार्या की कलम से’

मुझे हिंदी, संस्कृत और फ्रेंच में छात्रों के लेखों के संकलन का दूसरा संस्करण देखकर गर्व हो रहा है। शिक्षकों और छात्र संपादकों की टीम को हार्दिक बधाई। कलाकृति और डिज़ाइनिंग विशेष उल्लेख के योग्य हैं। सभी नवोदित लेखकों और कलाकारों के लिए... आपकी रचनात्मक अभिव्यक्ति की सराहना की जाती है और यह हृदयांगिनी को पढ़ने के लिए आनंददायक बनाती है।

धन्यवाद।

सुश्री अर्पिता चक्रवर्ती

वार्षिक दिवस, सत्र 2023 - 24

'द एंचांटेड टिंकरलेंड' का आयोजन 21 और 23 दिसंबर को किया गया। नर्सरी, एल.के.जी व यू.के.जी के बच्चों ने इसमें बढ़-चढ़कर भाग लिया और नृत्य व गायन द्वारा टेक्नोलॉजी के उचित उपयोग का संदेश लोगों तक पहुँचाया। आज की भाग-दौड़ भरी ज़िंदगी में मोबाइल फोन के अत्यधिक प्रयोग और उसके सामाजिक जीवन पर होने वाले नकारात्मक प्रभाव को दर्शाया गया। मुख्य अतिथि, प्रधानाचार्या और सभी बच्चों के अभिभावकों ने इस पूरे कार्यक्रम की सराहना करते हुए बच्चों को बहुत प्रोत्साहित किया।

गुरु-पूरब

आयशर स्कूल के प्रांगण में विद्यार्थियों ने गुरूपर्व का त्योहार बहुत हर्षोल्लास के साथ मनाया। कक्षा यू.के.जी. हिबिस्कस के छात्रों ने गुरु नानक देव जी द्वारा दी गई शिक्षाओं का नाट्य रूपांतरण किया और नगर-कीर्तन की झाँकी भी प्रस्तुत की। बच्चों ने शब्द-कीर्तन में भाग लिया और कड़ा प्रसाद के वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

विश्व हिंदी दिवस

10 जनवरी 2024, **विश्व** हिंदी दिवस के रूप में मनाया गया। शिक्षकों ने हिंदी भाषा के महत्त्व और **विश्व** हिंदी दिवस को मनाए जाने के इतिहास से सभी छात्रों को अवगत करवाया। बच्चों ने सुंदर पोस्ट डिज़ाइन किए। उन्होंने उत्साह और उमंग के साथ इसमें भाग लिया और भाषा को प्रोत्साहित करते हुए इससे संबंधित कविता का गायन भी किया।

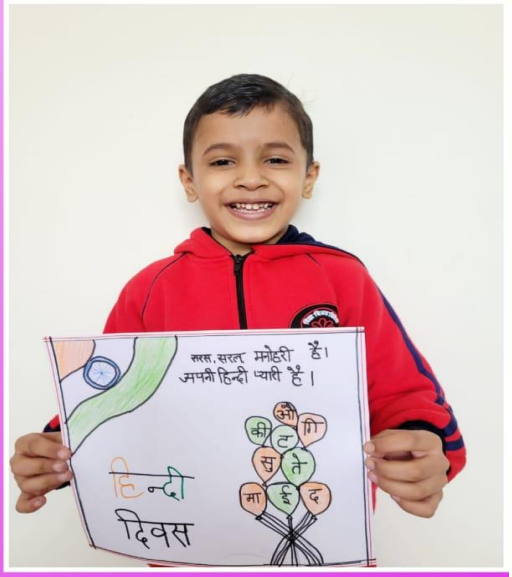

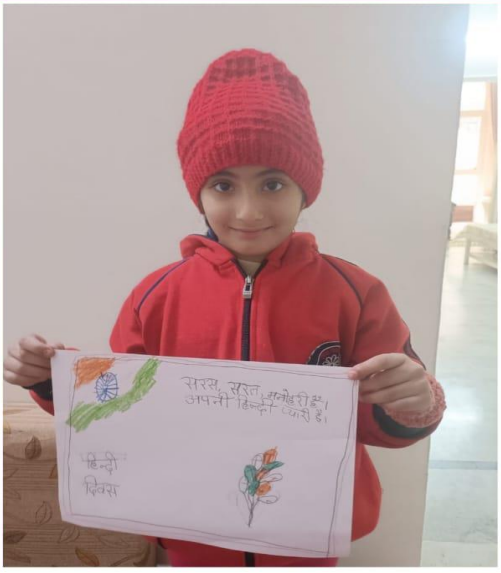

किडज़ानिया

किडज़ानिया एक शिक्षाप्रद थीम पार्क है, जहाँ बच्चों को वास्तविक जीवन के संबंध में ज्ञान मिला। जैसे- डॉक्टर, पुलिसवाले, शिक्षक, बागवान, बालस्थायी कर्मचारी आदि के काम करने के तरीके का अनुभव कराया गया। बच्चों ने अपनी यात्रा के दौरान सभी गतिविधियों का अच्छी तरह से आनंद लिया और विभिन्न समुदाय के लोगों के बारे में जानकारी प्राप्त की। सच में यह एक शिक्षाप्रद और मनोरंजक यात्रा रही।

Chipa's Locker

PROTECTING LIFE

HOTEL

किचन गार्डन

किचन गार्डन हमारे स्कूल का एक प्रमुख स्थान है जहाँ छात्रों को पौधों की जानकारी देने के लिए विभिन्न पौधे उगाए जाते हैं। माली भैया की मदद से यहाँ पहले मिट्टी तैयार की जाती है और इसके उपरांत कक्षा के सभी छात्र उसमें विभिन्न प्रकार के बीज लगाते हैं। छात्र समय-समय पर किचन गार्डन का भ्रमण करते हैं और अपने द्वारा लगाए गए पौधे को बढ़ता हुआ देखते हैं। इसके माध्यम से वे न केवल विभिन्न प्रकार के पौधों की जानकारी प्राप्त करते हैं बल्कि प्रकृति की तरफ़ उनका रुझान भी बढ़ जाता है।

मस्ती भरी पाठशाला

16 नवम्बर को आयशर स्कूल में मस्ती भरी पाठशाला का आयोजन किया गया । मस्ती भरी पाठशाला में कक्षा नर्सरी, एल.के.जी और यू.के.जी के छात्रों में वन्यजीवों के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए शिक्षिकाओं द्वारा एक कहानी का नाट्य रूपांतरण प्रस्तुत किया गया। इस नाटक से बच्चों ने विभिन्न जानवरों के जीवन से जुड़ी बहुत सी बातें सीखीं । उन्होंने अपने मनपसंद जानवर के रंग-बिरंगे मुखौटे बनाए और उन्हे पहनकर दौड़ में भाग लिया। खेल-खेल में छात्रों ने पशु-पक्षियों से संबंधित अपने ज्ञान को बढ़ाया ।

'मस्ती भरी पाठशाला' एक दिलचस्प गतिविधियों से भरा ऐसा दिन है जो छात्रों को सोचने, योजना बनाने, कल्पना करने तथा अन्य कौशल सीखने तथा दिखाने का अवसर देता है। जिसमें कक्षा दूसरी के छात्रों को न केवल खेल खिलाए गए बल्कि विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा विषयों की पुनरावृत्ति भी करवाई गई। छात्रों ने दिशाओं को पहचान कर छुपाई गई चीजों को ढूँढा, चायनीज़ विस्पर खेल कर नए शब्द सीखे और किचन गार्डन में तरह- तरह के पौधों की पहचान की । यही नहीं छात्रों ने विभिन्न पेड़-पौधों के सुंदर चित्र भी बनाए । छात्रों का उत्साह और उनके चेहरों पर झलकती खुशी सच में मन को भाने वाली थी।

बैगलेस दिन एक रोमांचक दिन था जिसमें बच्चों ने किताबों के बिना सीखने का और किचन गार्डन की यात्रा का आनंद लिया। उन्होंने अपनी अवलोकनात्मक कला फ़ाइल में अपनी भावनाओं को खूबसूरती से प्रस्तुत किया।

मन की बात-(कविता अंश)

कलाकृति-नैनांश खत्री, नौवीं 'सी'

पिता

पिता जो मिठास भरा शब्द है
मैं उनके बारे में क्या लिखूँ ?
मैं तो उनका हस्ताक्षर हूँ,
पिता हैं तो मैं साक्षर हूँ।
पिता बच्चों का आसमाँ होता है,
बच्चों में ही उसका सारा जहाँ होता है।
पिता सारी उम्र बच्चों के लिए काम कर लेता है,
अपना हर एक सपना बच्चों के नाम कर देता है।
अपना अनुभव उनमें जोड़ता है,
बच्चों के पाँव से दौड़ता है,
पर बच्चों को कभी अकेला नहीं छोड़ता है।
वह हर गलती माफ़ कर देता है,
बच्चों के लिए रास्ता साफ़ कर देता है।
वह प्यार जता नहीं पाता,
कभी किसी को बता नहीं पाता।
उसके दिल में भी तूफ़ान होता है,
बच्चों के लिए वह भी परेशान होता है।
क्या कहूँ - पिता कौन है?
वह घर की शान है
या मज़बूत चट्टान है
या अपने घर में ही मेहमान है?
सुबह जाता है, देर साँझ घर आता है,
बच्चों की मुस्कान देखकर,
अपनी थकावट भूल जाता है।
पिता दिवस पर सबने पिता का स्टेटस है लगाया,
मत भूलो यह 'स्टेटस' तुमने पिता से ही है पाया।

शौर्य शर्मा- पाँचवीं 'ए'

मौसम

देखो कुदरत कैसी लीला रचाए,
अलग-अलग मौसम ले आए।
हर मौसम की छटा निराली,
सचमुच बात ये सोचने वाली।
सर्दी, गर्मी, बारिश और बसंत,
इस चक्र का नहीं है कोई अंत।
सर्दी संग सर्द हवाएँ लाए,
सूरज चाचा डरकर छिप जाए।
गर्मी तपती लू चलाए,
बाहर जाने को जी न चाहे।
आहा! आई वर्षा रानी,
मैं तो उसकी हूँ दीवानी।
धरती की वह तपन बुझाए,
खेत-खलिहान खुश हो लहराएँ।
पतझड़ में पत्ते झड़ जाएँ,
बसंत नए फूल खिलाए।
हर मौसम का मज़ा उठाओ,
प्रकृति को दुख न पहुँचाओ।

कलाकृति-काशवी मेंदीरत्ता
तीसरी 'ए'

सानवी बजाज-सातवीं 'बी'

हौंसला

काँटे हैं राहों में मत घबराना।
मुश्किलों को हल करते जाना।।
फर्ज़ है अपना मेहनत करना।
कभी न रुकना, कभी न डरना।।
ज़िंदगी की राहों में नेकी करते जाना।
बदले में मिले बुराई तो भी दिल न दुखाना।।
हौसलों को अपने बुलंद बनाना ।
मकसद को हासिल करके दिखाना।।
जीवन में ऐसा मुकाम पाना।
जो याद रखे सारा ज़माना।।
असंभव नहीं है कुछ भी इस जहाँ में कर पाना।
बस नेक कर्मों से बढ़ाओ दुआओं का खज़ाना।।

वंशिका ग्रोवर-दसवीं 'सी'

देखो ठंडी आई

कलाकृति-मायरा तीसरी 'ए'

कलाकृति-तनीषी पाँचवीं 'सी'

आई देखो ठंडी आई
मौसम ने लेली अँगड़ाई
आई देखो ठंडी आई।
बंद हो गए पंखे सारे,
आई देखो ठंडी आई।
निकल गई सबकी रजाई,
पानी को छूते ही गुड़िया चिल्लाई।
ठंडी हवा से देखो त्वचा है मुरझाई।
आई देखो ठंडी आई।
नहाने से सब डरने लगे हैं जन।
उठने का अब तो करता नहीं है मन।
कोहरे को छाँटकर देखो धूप निकल आई।
सर्दी से सबको राहत है दिलाई।
आई देखो ठंडी आई।

अनिष्का गुप्ता-सातवीं 'ए'

आई दीवाली आई

कलाकृति-नैनांश खत्री,
नौवीं 'सी'

आई दीवाली आई,
साथ में खुशियाँ लाई,
धन-धान्य से भंडार भरेंगे,
लड्डू-मोदक खूब मिलेंगे,
खुशियों से आँगन भरेंगे,
लक्ष्मी-गणेश की पूजा करेंगे।
आई दीवाली आई,
साथ खुशियाँ लाई,
सालों बाद रिश्तेदार मिलेंगे,
दीपक हर जगह उजाला करेंगे,
नए कपड़ों में लोग सजेंगे,
हर जगह सुनहरी दीये जलेंगे।
करेंगे न कोई प्रदूषण,
सब में अलख जगाएँगे,
न हो कोई परेशान,
ऐसे दीवाली मनाएँगे।
कृत्रिम रंगों से नहीं,
फूलों से सजेगी रंगोली।
विदेशी लड़ियाँ नहीं,
स्वदेशी होगी दीपावली।
श्री राम का नारा लगाएँगे,
भाई-चारा सबसे बढ़ाएँगे,
हिन्दू,मुस्लिम,सिख,ईसाई,
मिलकर खुशी के दीए जलाएँगे,
धूमधाम से दीवाली मनाएँगे।

रितिशा सिंह-सातवीं 'ए'

पेड़

पेड़ हैं हमारे जीवन की शान,
क्यों काट कर करते हो इनका अपमान?
ये हमें गर्मियों में धूप से बचाते,
ठंडी पवन को हमारे पास ले आते।
ये पर्यावरण से प्रदूषण लेते,
बदले में ऑक्सीजन देते।
पत्ते होते इनकी शान,
इनमें भी होती है जान।
पेड़ हमें फल,फूल और औषधि देते,
बदले में हमसे कुछ ना लेते।
आओ मिलकर पेड़ लगाएँ,
धरती को खुशहाल बनाएँ।

अर्जुन सिंह-सातवीं 'डी'

अनुशासन का महत्त्व

कलाकृति
पर्णिका अग्रवाल-छठी 'डी'

स्वयं पर स्वयं का शासन,
कहलाता है अनुशासन।
यह कोई पराधीनता नहीं,
ना ही है कोई बंधन।
यह है नियमों का अनुसरण,
बनता है जिससे आदर्श जीवन।
अनुशासन चेतना का है परिष्करण,
यह सिद्धांतों का है अनुकरण।
अनुशासन सुसंस्कार है,
सकल जीवन का यही आधार है।
अच्छे विद्यालय ही
अनुशासन के निर्माता हैं,
सुसंस्कृत परिवार में ही बालक
अनुशासन पाता है।
अनुशासित विद्यार्थी बढ़ाते हैं देश का मान,
जो दिखाते हैं अनुशासनहीनता,
नहीं पाते कहीं सम्मान।
समाज में बढ़ती अव्यवस्था,
अनुशासनहीनता का परिणाम है।
नियमों को जो करते हैं दरकिनार,
बुद्धिमान नहीं वे नादान हैं।
अनुशासन राष्ट्र हित में ज़रूरी है,
ना सोचो कि यह कोई मज़बूरी है।
कर्तव्य का पालन हमारी ज़िम्मेदारी है,
अनुशासित रहना ही सच्ची समझदारी है।
अनुशासन के बिना सफलता अधूरी है।
प्रशासन, स्कूल, समाज और परिवार
सबकी सफलता के लिए
अनुशासन ज़रूरी है।

वंशिका ग्रोवर-दसवीं 'सी'

नैनांश खत्री-नौवीं 'सी'

दीपक होता है शिक्षक

दीपक होता है शिक्षक,
बाती उसका विद्यार्थी।
घी विद्यार्थी का
अध्ययन,
लौ उसका जीवन।
बाती बिन दीपक सूना,
दीपक बिन बाती।
अध्ययन रूपी घी ना हो,
तो लौ कहाँ से आती?
ब्रह्मा के ये रूप हैं,
गुरु तो देव स्वरूप हैं।

प्रियांशी द्विवेदी-दसवीं 'ए'

विश्व कप 2023 और कोहली का विराट खेल

19 साल का चीकू आया,
क्रिकेट की दुनिया में छाया,
शतकों में भी शतक लगाया,
कोहली का विराट खेल है, हर
क्रिकेट फ़ैन की ज़रूरत,
कोहली का बल्ला बदल देता है,
हर हारते मैच की सूरत!!
रह गया विश्व कप भारत का
होते-होते,
देखा हमारी आँखों ने ये रोते
रोते!!
अभी उम्मीद है हमारी टूटी नहीं,
जो भी हुआ गलत, वह होगा
सही!!
2027 में एक बार फिर कोहली
आएगा,
और विश्व कप भारत में ही
लाएगा !!

कुशाग्र खुराना-पाँचवीं 'सी'

विद्या

विद्या वह भंडार ज्ञान का,
जिसका ओर न छोर,
विद्या ऐसा धन है
जिसको चुरा सके न चोर।

सागर की लहरों को छूती,
अंबर से भी काफ़ी ऊँची,
विद्या तेरी एक हिलोर।
विद्या ऐसा धन है,
जिसको चुरा सके न चोर।
जितना बाँटो उतना बढ़ता,
कोई नहीं बँटवारा करता।
देती मन झकझोर,
विद्या ऐसा धन है,
जिसको चुरा सके न चोर।
विद्या का भंडार पुराना,
बिन चाबी का खुला खज़ाना।
मचा हुआ है शोर,
विद्या ऐसा धन है
जिसको चुरा सके न चोर।

कलाकृति-लावण्या कपूरछठी 'डी'

वंशिका ग्रोवर-दसवीं 'सी'

गेजेट्स ने कर दिया कमाल

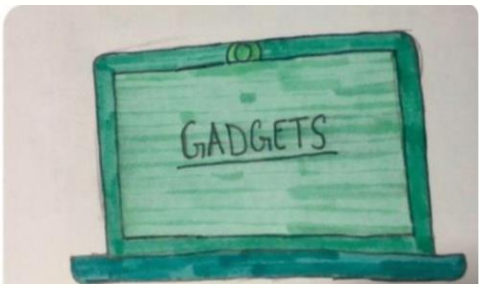

कलाकृति-ताइशा भगोत्रा, नौवीं सी

गेजेट्स ने कर दिया कमाल,
जहाँ देखो वहाँ इनका धमाल।
कोई कर रहा है फ़ोन पर बात,
कोई आई पैड पर है पूरी रात।
ट्विटर पर दिल की बात,
फेसबुक पर बधाई,
इंस्टा पर रिश्ते निभाते- निभाते,
देखो कैसी है शामत आई।
अब न किसी का किसी से नाता,
इनके अलावा न कुछ भाता।
मानो टेबलेट ही बन गए हैं हम,
सोचा था कि इनसे होगी सर्दी कुछ कम,
जागो सब जागो,
मत इन गेजेट्स की रेस में भागो,
वरना कोई साथ न रहेगा मित्र,
बनकर सिर्फ़ रह जाओगे चित्र।

ताइशा भगोत्रा-नौवीं 'सी'

दीपावली

यह राम-लखन के आने की ख़ुशी है,
यह भरत-शत्रुघन के फ़र्ज़ निभाने की ख़ुशी है।

यह मैं नहीं जानता,
मैं तो यह हूँ मानता,
दीया अगर शिक्षा का जलता है,
तो पीढ़ियों में उजाला करता है।
एक दीया आप जलाओ,
एक दीया हम जलाएँ,
शिक्षा को उजागर करें,
शिक्षित समाज बनाएँ।
शिक्षा ऐसी, जैसी राम जी ने पाई थी,
लक्ष्मण जी ने निभाई थी,
भरत जी ने माथे से लगाई थी,
शत्रुघ्न जी ने गाई थी,
तभी तो दीवाली आई थी
दीवाली आई थी आती रहेंगी।
किसी एक को शिक्षित कर दें,
पीढ़ियाँ दीवाली मनाती रहेंगी।

शौर्य शर्मा- पाँचवीं 'ए'

बौद्धिक चिंतन-(लेख)

कलाकृति-नैनांश खत्री, नौवीं 'सी'

ए.आई.वरदान

आरुष मल्होत्रा-नौवीं 'सी'

क्या ए.आई. वरदान है या अभिशाप?

आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) मानवता के लिए एक ज़बरदस्त वरदान होने का वादा करता है। इसके अनुप्रयोग विभिन्न क्षेत्रों में फैले हुए हैं, जिनमें स्वास्थ्य देखभाल की प्रगति से लेकर उद्योगों में सुव्यवस्थित स्वचालन, दक्षता बढ़ाना और कार्यों को अधिक प्रबंधनीय बनाना शामिल हैं। ए.आई. वैज्ञानिक खोजों में सहायता करता है, प्रक्रियाओं का अनुकूलन करता है और मानव क्षमताओं को बढ़ाता है। स्वास्थ्य देखभाल में, बीमारियों का निदान और उपचार करने में सहायता करता है, जिससे संभावित रूप से अनगिनत लोगों की जान बचाई जा सकती है। कृषि में यह फसल की पैदावार को अनुकूलित करता है।

अनुभूति-(अनुभव एवं यात्रा संस्मरण)

कलाकृति-नैनांश खत्री, नौवीं 'सी'

यात्रा संस्मरण - मेरी आध्यात्मिक यात्रा

गर्मी की छुट्टियाँ हमेशा ही सुखद होती हैं लेकिन अगर आप कहीं घूमने जाते हैं तो वे और भी मज़ेदार हो जाती हैं। मैं अपने परिवार के साथ 'वैष्णो देवी मंदिर' गई। बारह घंटे गाड़ी में थका देने वाले दिन के बाद हम कटरा शहर पहुँचे। अगले दिन सुबह-सुबह हमने मंदिर की चढ़ाई शुरू की। चार से पाँच घंटों में हम मंदिर पहुँचे। स्नान के बाद हमने मंदिर के दर्शन किए। मैं अपने जीवन में वह दृश्य कभी नहीं भूल सकती। यह एक सुरम्य और सौन्दर्य भरा दृश्य था। पहाड़ों पर पड़ती शाम की धूप में सभी लोगों ने देवी की आराधना के लिए हाथ जोड़े। लगभग चौदह किलोमीटर पैदल चलने से सभी लोग थक गए थे, लेकिन इतना आध्यात्मिक और सुंदर दृश्य देखकर सभी के चेहरे पर मुस्कान आ गई। फिर वह क्षण आया, जब हमने उन तीन पिंडियों के दर्शन किए और देवियों से आशीर्वाद लिया।मैंने माता रानी से सिर्फ़ यह कामना की कि मैं अपने जीवन में बहुत सफल बनूँ और बड़े मुकाम हासिल करूँ।वैष्णो देवी मंदिर जाने के बाद हम सबको बहुत ही आनंद और शांति महसूस हुई। वास्तव में ईश्वर का साथ हमें मानसिक और भावनात्मक रूप से शक्तिशाली बनाता है।

नंदिका पुंज-नौवीं 'सी'

कल्पना की उड़ान-(कहानी लेखन)

कलाकृति-नैनांश खत्री, नौवीं 'सी'

मेरे मन की कहानी

मैं अपने पापा के साथ रोज़ सुबह स्कूल जाने के लिए अपनी सोसाइटी के बाहर बस के इंतज़ार में अक्सर कुछ चीज़े देखती थी। एक गाय माता अपने बच्चों को जीभ से चाट रही थी। मैंने यह सोचा कि यह बछड़े को चाट क्यों रही है। मैंने अपने पापा से पूछा कि पापा यह गाय अपने बच्चों को क्यों चाट रही है तो पापा ने बताया कि बेटा भगवान ने इनको प्यार जताने के लिए जीभ दी है तो मैंने सोचा कि मेरे कृष्ण भगवान ने हर किसी के लिए प्यार जताने के लिए कुछ न कुछ भावनाएँ दी हैं। हमारे भगवान कितना दयालु हैं, हम सबका ख्याल रखते हैं।

राजवी-तीसरी 'डी'

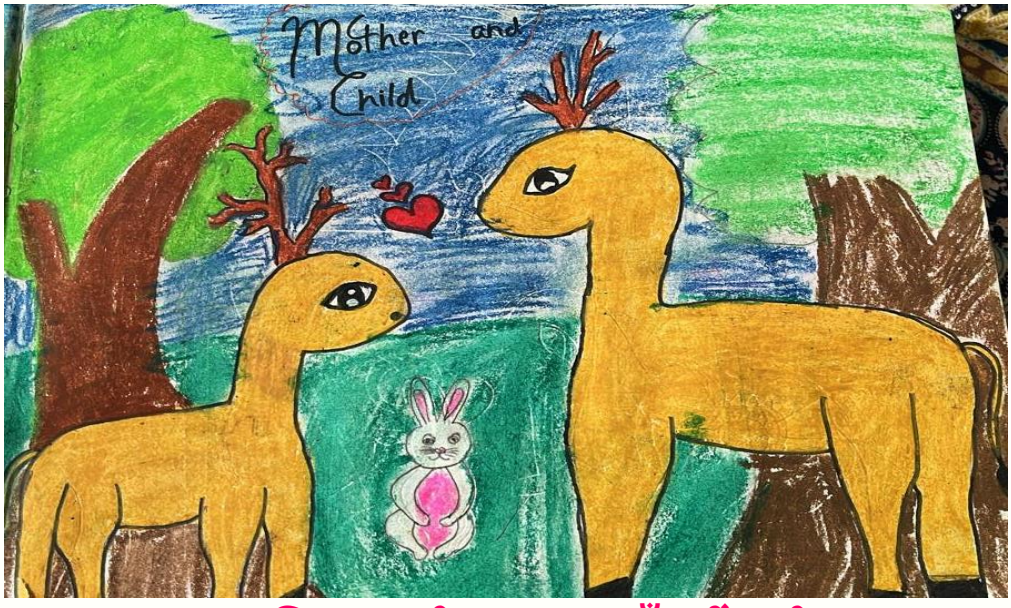

कलाकृति-सानवी रावत, पाँचवीं 'सी'

वनवीर की ईमानदारी मेरी जुबानी

बहुत साल पहले की बात है। एक था राजा जिसका नाम था- संजय उसकी पत्नी का नाम था संजीता। राजा के दो बच्चे थे-समीर और वनवीर। वनवीर बड़ा भाई था। वह बहुत ही अच्छा इंसान था। वह सब की मदद करता था। एक दिन राजा के मन में वनवीर और समीर की परीक्षा लेने का विचार आया। संजय उन दोनों को बुलाता है और कहता है कि तुम एक कागज़ पर लिखकर लाओ कि तुम्हें अपनी ज़िंदगी में सबसे अनमोल चीज़ क्या लगती है, शर्त यह थी कि उन दोनों को एक-दूसरे को यह नहीं बताना था कि उन्होंने कागज़ पर क्या लिखा है। वह कागज़ राजा को अगली सुबह देना था। कुछ समय के बाद वे दोनों लिखते हैं। वनवीर लिखता है- माता-पिता के पैसे और समीर लिखता है- परिवार की खुशी। वनवीर बेसब्री से यह जानना चाहता था कि समीर ने क्या लिखा होगा। रात को जब सब सो गए थे, वनवीर समीर के कमरे में जाता है और उसका कागज़ पढ़ता है। वह सोचता है कि मुझे भी ऐसा ही कुछ लिखना चाहिए था। उसको लगा कि यह गलत काम होगा कि अगर अब वह अपनी लिखी हुई बात बदल देगा। सुबह हो जाती है। दोनों राजा के पास चले जाते हैं। राजा ने कहा, “बहुत खूब समीर तुमने बहुत ही अच्छा लिखा, मैं तुम्हें शाबाशी देता हूँ।”

कलाकृति-प्रिशा, छठी 'डी'

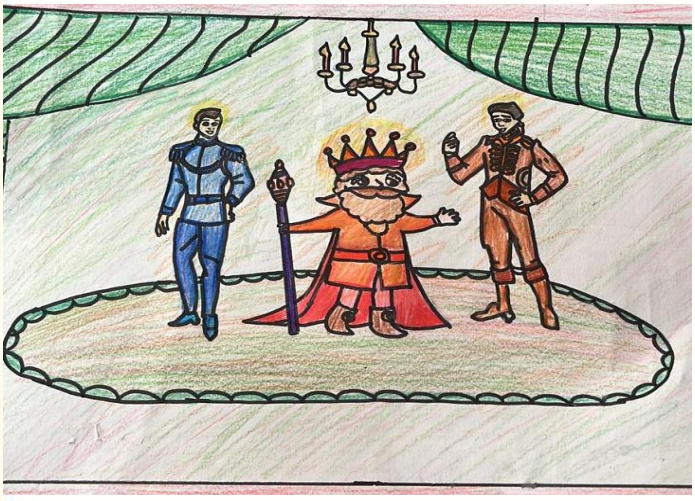

कलाकृति-सांची, छठी 'डी'

वनवीर का कागज़ खोलकर राजा ने बस देखते ही कहा, "तुमने भी बहुत अच्छा लिखा है वनवीर, पर तुमने ₹100000 को काटकर खुश परिवार क्यों लिखा है?" वनवीर चौक जाता है, क्योंकि उसने ऐसा काम तो किया ही नहीं था। वह यह भगवान का करिश्मा मानता है और हैरान हो जाता है। वनवीर बहुत खुश होता है और कहता है, पिताजी! मुझे यह तो पता नहीं पर मैं बहुत खुश हूँ।

संदेश- भगवान कभी अच्छे लोगों के साथ बुरा नहीं कर सकते।

प्रिशा-छठी 'डी'

आयशर की रसोई – (व्यंजन विधियाँ)

अवनी कश्यप-छठी 'सी'

सेवइयाँ

-एक पैन में मक्खन और सेवइयों को एक साथ भून लें।

-इसमें काजू, बादाम और किशमिश डालें, इन्हें एक साथ भून लें।

-एक अलग पैन में दूध, चीनी और पीसी हुई हरी इलायची डालकर उबालें।

-जिस पैन में दूध था उसमें भुनी हुई सेवइयों का मिश्रण डालें। सामग्री को एक साथ मिलाएँ और केसर डालें।

गर्म-गर्म परोसें।

सरा बीनू थॉमस-छठी 'डी'

बेसन के लड्डू

सामग्री-

बेसन, चीनी, बादाम, छोटी घी, काजू, इलायची

विधि-

सबसे पहले गैस पर कढ़ाई रखकर उसमें घी डालिए। उसके गर्म होने पर बेसन डालकर धीमी ऑच पर भूनिए। भूरा होने पर उसमें काजू, बादाम पीसकर मिला दें। अब गैस बंद करके कढाई उतार दीजिए। फ़िर पिसी हुई चीनी और इलायची पाउडर डालकर अच्छे से मिला दें। उस मिश्रण के गोल-गोल लड्डू बनाइए और मज़े से खाइए।

आयुषी कुमार-छठी 'डी'

स्वीट कॉर्न कटलेट रेसिपी

सामग्री:

स्वीट कॉर्न - 2 कप

2 उबले हुए आलू

बारीक कटी हुई-

1 प्याज, 1 हरी मिर्च

1 शिमला मिर्च

½ चम्मच- अदरक का पेस्ट

लाल मिर्च,गरम मसाला

चाट मसाला,हल्दी पाउडर

काली मिर्च, नमक

¼ कप ब्रेड क्रम्ब्स

2 चम्मच बेसन

1 चम्मच कॉर्न फ्लोर

1 चम्मच नींबू का रस

2 चम्मच कटा हुआ धनिया

तलने के लिए तेल

सबसे पहले कॉर्न को पीसकर दरदरा पेस्ट तैयार करें। साथ ही आलू को भी मैश कर लें। इस मिश्रण में प्याज, शिमला मिर्च, हरी मिर्च और अदरक का पेस्ट, हल्दी पाउडर, कश्मीरी लाल मिर्च, गरम मसाला, चाट मसाला, ब्रेड क्रम्ब्स, हरा धनिया, काली मिर्च, नींबू का रस, नमक, भुना हुआ बेसन और कॉर्न फ्लोर डालकर मिलाएँ। हाथों पर तेल लगाएँ और छोटी लोई लेकर कटलेट तैयार कर लें। अब गर्म तेल में डीप फ्राई करें और सुनहरा होने के बाद निकाल लें। बस आपके स्वादिष्ट और कुरकुरे कॉर्न कटलेट तैयार हैं।

अवनी कश्यप-छठी 'सी'

मूँग दाल पिज़्ज़ा

सामग्री:

1 कप मूँग दाल

एक इंच अदरक

2 हरी मिर्च

स्वादानुसार नमक

2 बड़े चम्मच ऑयल

1 बड़ा चम्मच पिज़्ज़ा सॉस

1/2 कप मॉज़रेला चीज़

1 टमाटर

1 शिमला मिर्च

1 प्याज

1 बड़ा चम्मच कॉर्न

1 छोटा चम्मच ऑलिव

1 बड़ा चम्मच चिल्ली फ्लेक्स और ओरेगेनो

विधि :

भिगोई हुई मूँग दाल को ब्लेंडर में डालकर अच्छी तरह से पीस लें।

इसमें नमक और ईनो डालकर अच्छी तरह से मिक्स करें।

एक पैन को गर्म करें और तैयार बैटर डालकर उसे धीमी आँच पर पकने दें।

पक चुके बेस पर पिज़्ज़ा सॉस फैलाकर चीज़ डालें। इसके बाद सब्ज़ियाँ डालकर धीमी आँच पर ढककर पकाइए।

आप अपनी मनचाही सब्ज़ियाँ इसमें डाल सकते हैं। आपका मूँग दाल पिज़्ज़ा तैयार है।

ऊपर से चिल्ली फ्लेक्स और ओरेगेनो डालकर परोसिए।

अवनी कश्यप-छठी 'सी'

ठेकुआ बनाने की विधि

सामग्री

1 कप गुड़

2 कप गेहूँ का आटा

1 छोटी चम्मच सौंफ़

2 बड़ी चम्मच सूखा नारियल

4 पिसी हुई हरी इलायची

1/4 कप देसी घी

तलने के लिए घी या तेल

अवनी कश्यप-छठी 'सी'

विधि-

सबसे पहले गुड़ को बारीक तोड़कर ¼ कप पानी में घुलने तक पकाएँ। अब आटा तैयार करने के लिए किसी परात में गेहूँ का आटा, सौंफ़, नारियल, इलायची और घी डालकर मिला लें। इसमें गुड़ का घोल डाल दें और आटा गूँथ लें। आप चाहें तो इसमें थोड़ा दूध या पानी भी मिला सकते हैं। अब आटे को 10 मिनट के लिए ढक कर रख दें। अब आटे से लोई लें और हाथ से मसलते हुए गोल करके हथेली से दबा दें। इसमें काँटे की मदद से कोई भी डिज़ाइन बना लें। कढ़ाही में तेल गर्म करें और आंच को धीमा रखें। ठेकुआ डालें और एक साइड से 2-3 मिनट सेकने के बाद पलट दें। आपको इन्हें सुनहरा भूरा होने तक सेकना है। तैयार हैं स्वादिष्ट और एकदम मुलायम ठेकुए।

संस्कृत मंजरी

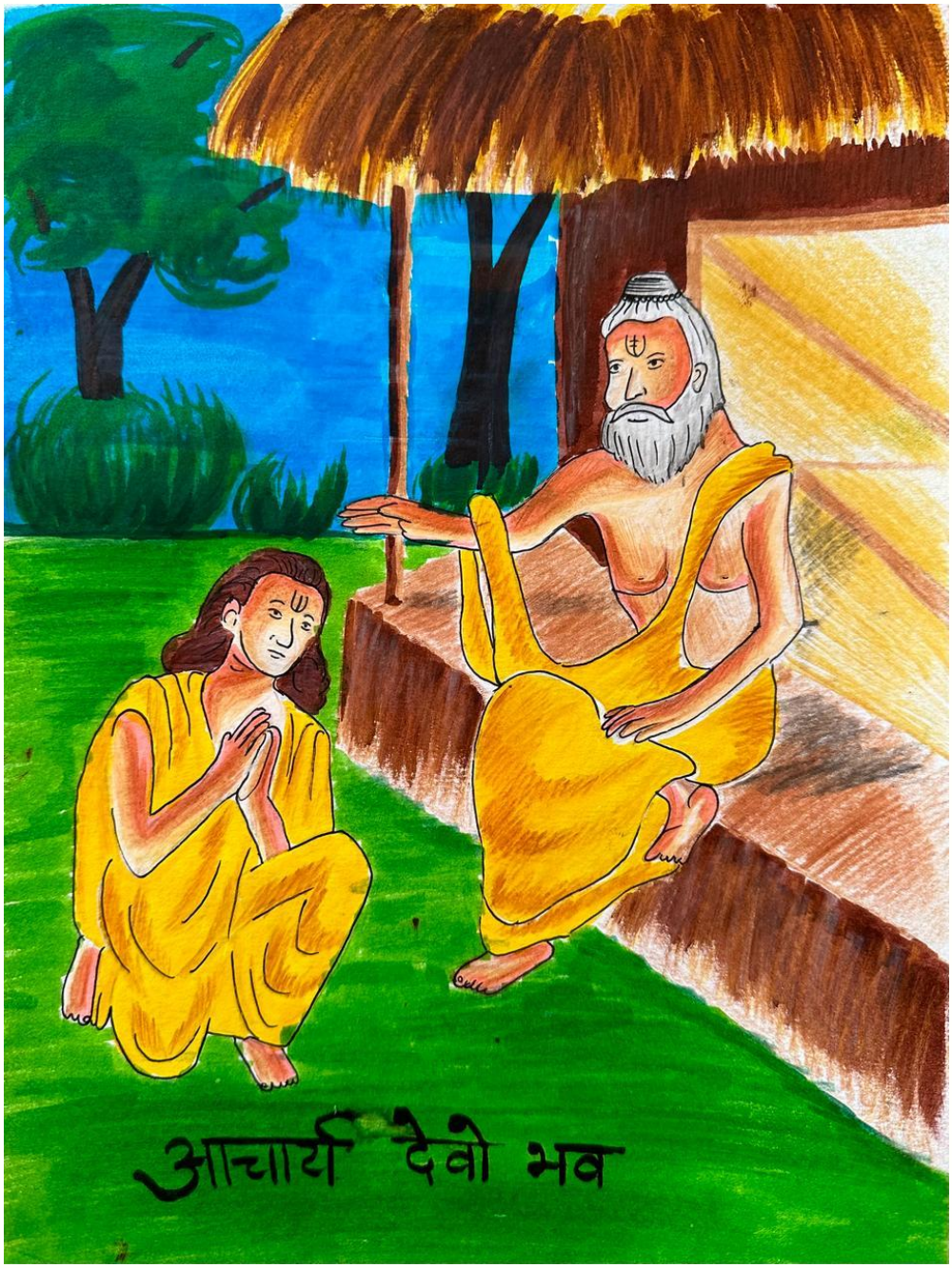

भुपेन्दर सिंह-आठवीं 'बी'

परोपकारी वृक्षः

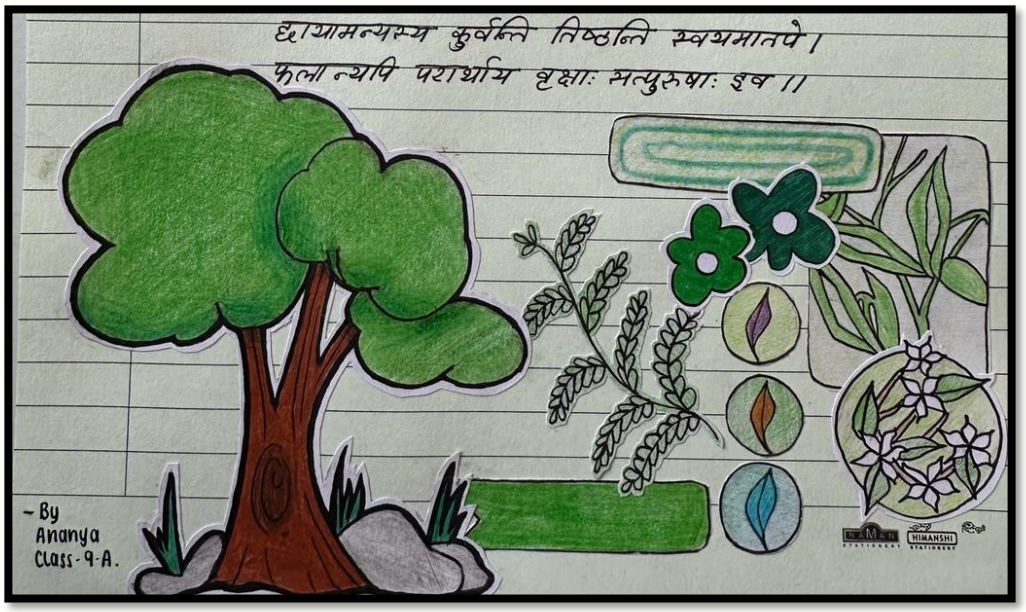

अनन्या-नौंवी'ए'

वृक्षाः पर्यावरणस्य आधाराः सन्ति । वृक्षाः बीजेभ्यः उद्भवन्ति। वृक्षाणां रङ्गः हरितः भवति। वृक्षाणां अनेकानि नामानि सन्ति।मृतिका, जलं, वायुः, सूर्यस्य प्रकाशः च एतान् पोषयन्ति। वृक्षाः अस्मभ्यं पुष्पाणि, पत्राणि, फलानि, कष्ठादिनि बहूनि वस्तूनि यच्छन्ति । अनेके पशवः खगाः च वृक्षेषु वसन्ति। ग्रीष्मकाले वृक्षाणां छायायां पथिकाः विश्रामं कुर्वन्ति। शुष्कवृक्षाः अपि उपयोगिनः भवन्ति। वृक्षाः प्राणवायुं विसृजन्ति। वृक्षैः पर्यावरणं स्वस्थं भवति । सत्यमेव कथ्यते-परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः।छायामन्यस्य कुर्वन्ति तिष्ठन्ति स्वयमातपे।फलान्यपि परार्थाय वृक्षाः सत्पुरूषा इव ॥

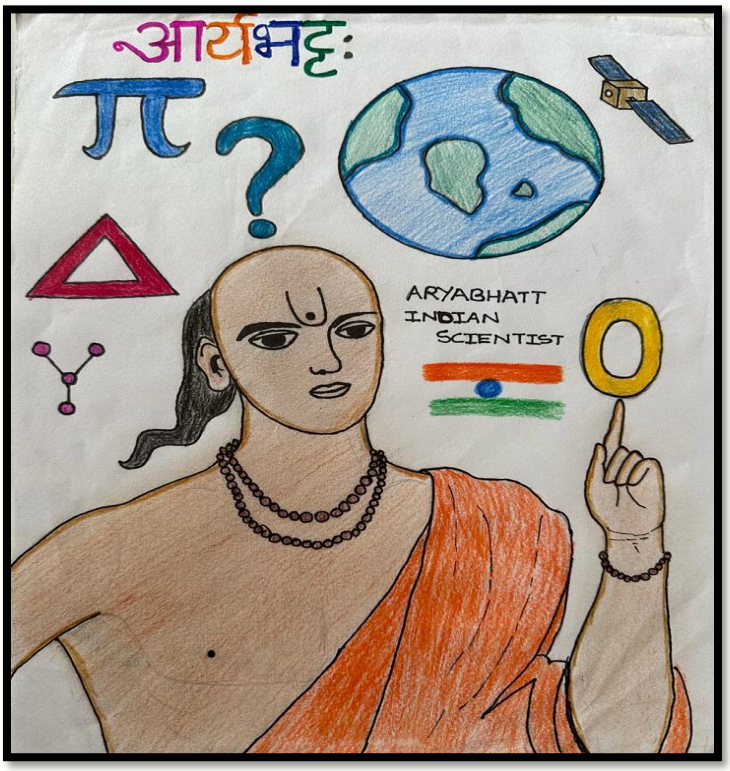

आर्यभटः

तेजस मक्कड़
नौवीं-ए

आर्यभटः प्राचीनभारतस्य महान् ज्योतिष-शास्त्रपण्डितः आसीत्। सः गणितविषये अपि प्रवीणः आसीत्। आधुनिकगणिते अपि आर्यभटेन शून्यम् इति संख्यायाः विचारः कृतः। तेन प्रतिपादितं यद् ग्रहणे राहुः केतुः च इति दानवौ नास्ति कारणम्। सः अकथयत् यत् धरा सूर्यं परितः भ्रमति। यदा धरायाः छायापातेन चन्द्रस्य प्रकाशः अवरूद्धयते तदा चन्द्रग्रहणं भवति। तथैव यदा धरायाः सूर्यस्य च मध्ये चन्द्रः आगच्छति तदा सूर्यग्रहणं भवति। आर्यभटः स्व विचारन् यस्मिन् ग्रन्थे अलिखत् तस्य नाम 'आर्यभटीयम्' इति अस्ति। आर्यभटस्य विज्ञाने महत् योगदानम् अस्ति, अतः भारतस्य प्रथमोपग्रहस्य नाम 'आर्यभट' इति अस्ति। आर्यभटः सत्यमेव वैज्ञानिकेषु गणितज्ञेषु च अग्रगण्यः अस्ति।

एहि हसाम

प्रथमः काकः - आतपे मा गच्छ।

द्वितीयकाकः - किमर्थम्?

प्रथमः काकः - आतपकरणात् तव वर्णः कृष्णः भविष्यति।

पतिः - (पत्नीं प्रति उच्चस्वरेण) - मम स्नानाय उष्णंजलं शीघ्रम् आनय, अन्यथा !!!!

पत्नी - (क्रोधपूर्वकम्) अन्यथा , भवान् किं करिष्यति?

पतिः - (ससम्भ्रमम्) - किं करिष्यामि? शीतलेन जलेन एव स्नानं करिष्याम्यहम्।

गणेशः - विभो ! विश्वे कति देशाः सन्ति?

विभुः - एकः।

गणेशः - तत् कथं?

विभुः - मूर्ख ! विश्वे एकः एव देशः अस्ति, अन्ये तु विदेशाः सन्ति।

शौर्य दिवान-नौवीं 'ए'

तन्मय चौहान-सातवीं 'बी'

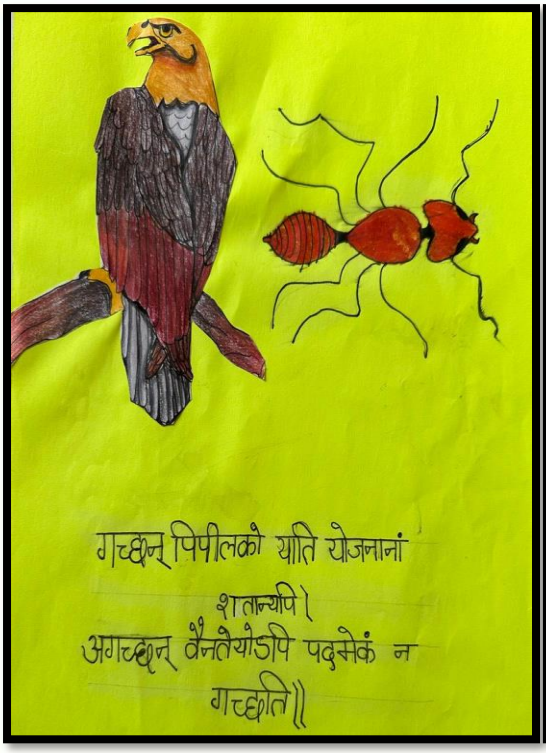

पूरव पटनायक
छठी 'ए'

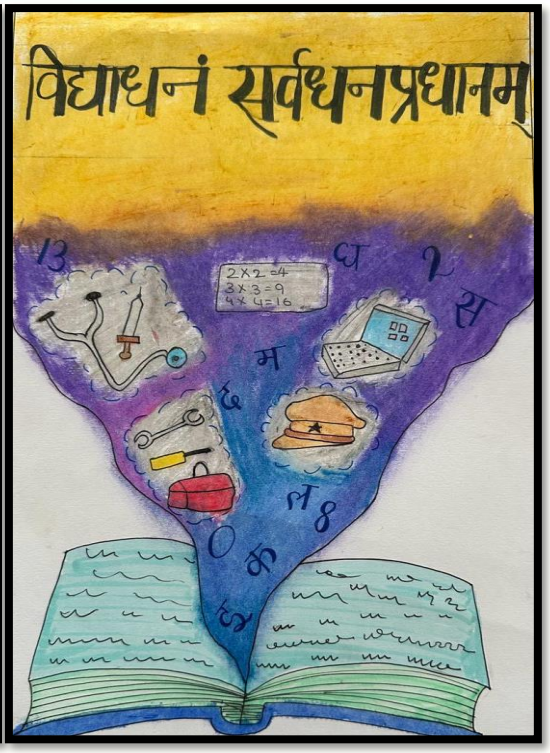

हिताशी
छठी 'ए'

मेहरदीप कौर
छठी 'ए'

इहिता सिंह
छठी 'ए'

लावन्या ज्योति-सातवीं 'बी'

हर्षिता नैन-छठी 'ए'

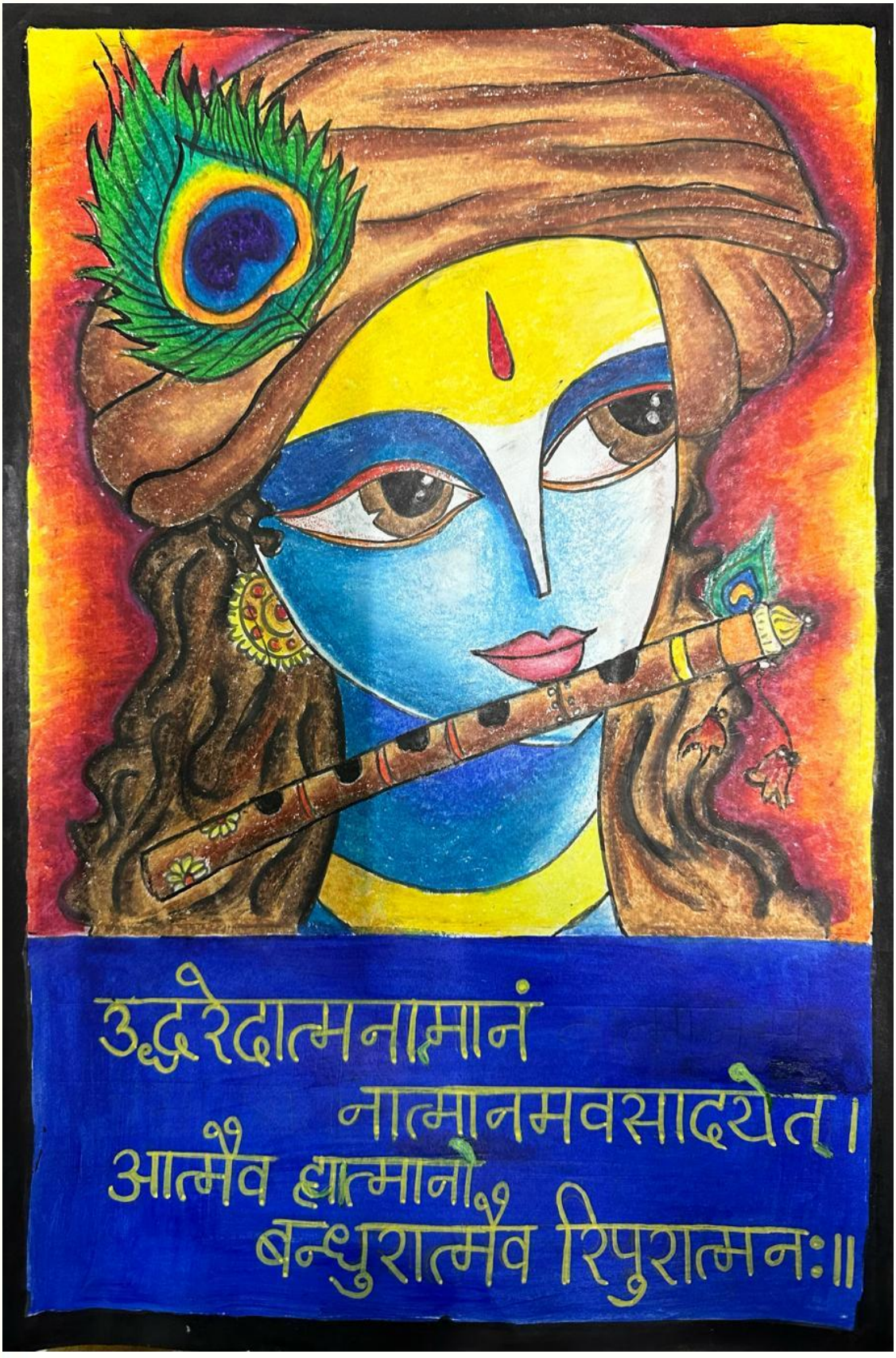

मनस्वी भंडारी-सातवीं 'ए'

French

Les Fêtes
La fête des Rois
Halloween
Pâques
Noël
Poisson d'Avril
La Carnaval
La Saint-Valentin
La fête de la Saint-Nicolas
- Kaaira 6B
Le fête du Muguet

KAIRA-VI B

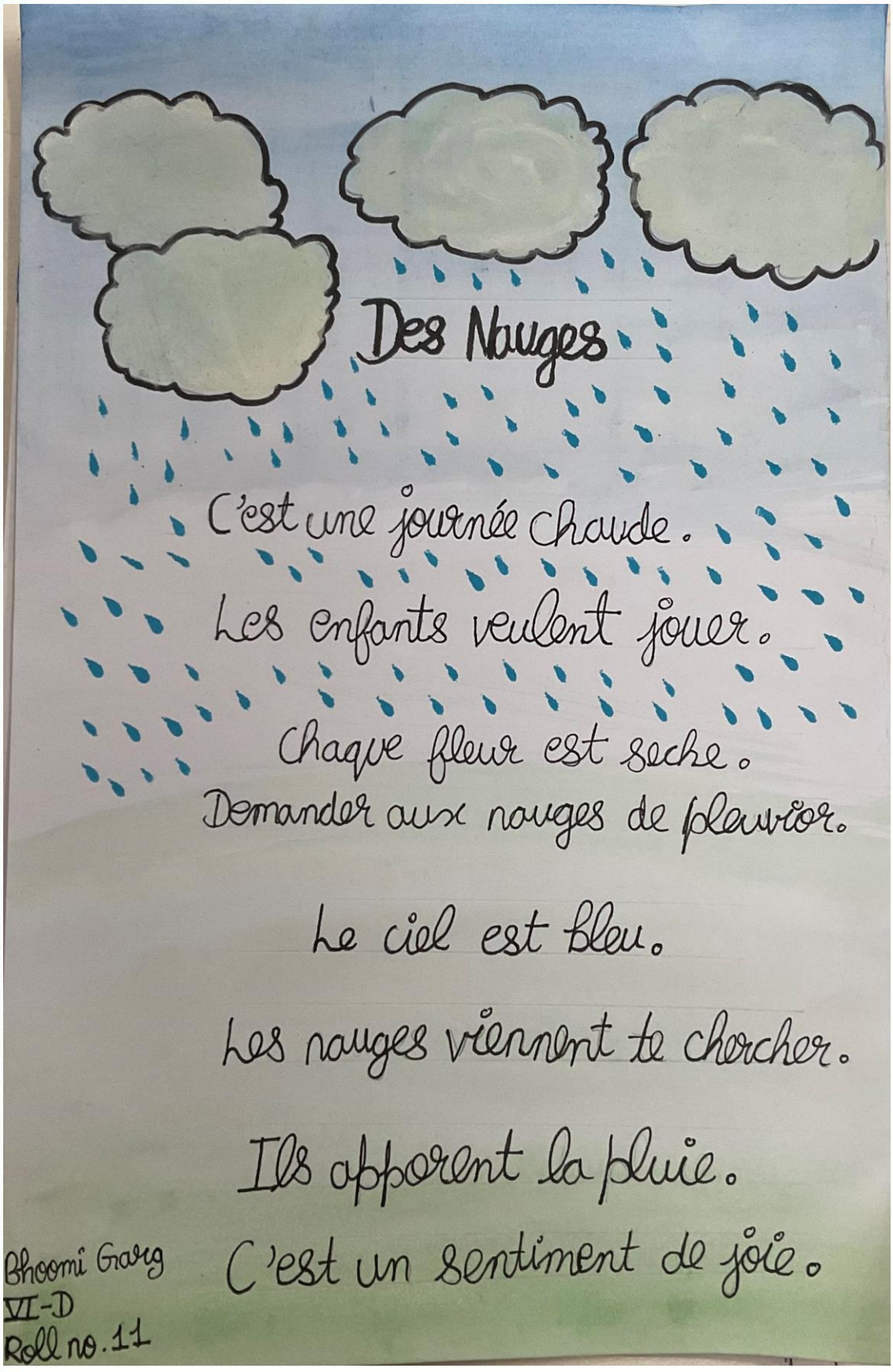

BHOOMI GARG-VI D

LAVANYA KAPOOR-VI D

Learn Some Common Verbs In French

NAME: Iknoor Bhatia [18] CLASS: 6th SECTION: B

MANGER
To Eat

BOIRE
To Drink

REGARDER
To Watch

ECOUTER
To Listen

MARCHER
To Walk

COURIR
To Run

FAIRE
To Make

LIRE
To Read

ATTENDRE
To Watt

ETRE
To Be

AVOIR
To Have

POUVOIR
Can

VOIR
To See

ALLER
To Go

PARLER
To Talk

IKNOOR BHATIA-VI B

हृदयांगिनी' कार्यकारिणी मंडल

संपादकीय

प्रिय पाठको हिंदी, संस्कृत एवं फ्रेंच विभाग की ओर से आयशर विद्यालय की पत्रिका 'हृदयांगिनी' आपके हाथों में सौंपते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता एवं हर्ष का अनुभव हो रहा है। इन भाषाओं को सम्मान देने हेतु विद्यार्थियों ने अपने भावों, कल्पना की उड़ान, बौद्धिक चिंतन को शब्द प्रदान किए हैं। बच्चों की चित्रात्मक प्रस्तुति देखते ही बनती है, उनके अथक प्रयास एवं प्रधानाचार्या सुश्री अर्पिता चक्रवर्ती के कुशल मार्गदर्शन हेतु हम सब उनका आभार व्यक्त करते हैं। आशा करते हैं कि आगामी वर्षों में भी विद्यार्थी इसी प्रकार इन भाषाओं के संवर्धन में अपना पूर्ण योगदान देंगे और आप इनके हौंसले को नई उड़ान देते रहेंगे।

संपादक मंडल

संरक्षिका (पेट्रन)

सुश्री अर्पिता चक्रवर्ती

प्रभारी शिक्षिकाएँ

हिंदी विभाग

श्रीमती संध्या द्विवेदी
श्रीमती गीतिका बजाज
श्रीमती अलका आनंद
श्रीमती मोनिका मल्होत्रा
श्रीमती प्रियंका हस्तीर

प्रकाशन प्रबंधक

सुश्री संगीता सेखानी

संस्कृत विभाग

श्रीमती रिंपल मेदीरत्ता

फ्रेंच विभाग

श्रीमती आँचल भाटिया

तकनीकी संपादिका

तरुणा आहूजा

छात्र संपादक मंडल

सानवीं बजाज-सातवीं 'बी'
प्रियांशी द्विवेदी-दसवीं 'ए'
वंशिका ग्रोवर-दसवीं 'सी'
नंदिका पुंज-नौवीं 'सी'